Prabhat Khabar (Date: - 10/01/2020)

ग्राहकों को खींच रही गुड़ और तिल की सोंधी खुशबू

इन दिनों मार्केट में गुड़ और तिल से बनी मिठाइयों की सोंधी खुशबू ऐसी फैल रही है कि लोग दुकान तक खिंचे चले आ रहे हैं. अब मकर संक्रांति को महज चार दिन शेष हैं. ऐसे में बाजार में चहल-पहल भी शुरू हो गयी है, जिसमें सबसे ज्यादा डिमांड तिलकुट की है.

बाजार में लाई और बादाम पट्टी भी है खास

मकर संक्रांति के अवसर पर इन दिनों बाजार में गुड़ की लाई और बदामपट्टी की मांग भी ज्यादा है. इसलिए दुकानदार अन्य चीजों के साथ-साथ ऐसी खास चीजें भी रख रहे हैं, जिनकी खरीदारी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है. इस बारे में कई विक्रेताओं ने बताया कि अभी तिल, गुड़, बादाम और मूढ़ी से बनी कई चीजों की मांग सबसे अधिक होती है.

मार्केट में तिलकुट की दुकान पर खरीदारी करते लोग.

विभिन्न फ्लेवर वाले तिलकुट व उनकी कीमत

गुड़ तिलकुट	₹ 300 से 400
खोआ तिलकुट	₹380 से 600
चीनी तिलकुट	₹250 से 300
तिल पापड़ी	₹250 से 350
फ्लेवर वाला तिलकुट	₹400- 600
शूगर फ्री तिलकुट	₹400 से 500
तिल का लड्डू	₹250 से 300
बादाम पट्टी	₹260
लाई	₹80 से 160
बासमती चूड़ा	₹60 से 80
कतरनी चूड़ा	₹ 60

नोट : कीमत रुपये प्रति किलो

साल का पहला त्योहार है मकर संक्रांति

साल का पहला त्योहार मकर संक्रांति ही होता है. इस दिन सूर्यदेव की पूजा अर्चना, उगते सूर्य को अर्घ, नदियों में स्नान और दान का विशेष महत्व होता है. मकर संक्रांति को लेकर कई लोग अपने रिश्तेदारों के लिए तिलकुट और चूड़ा भेजते हैं. इसलिए इसकी डिमांड सबसे ज्यादा होती है. कई बड़ी दुकानों में देर रात तक तिलकुट बनाये जा रहे हैं. तिलकुट बनाने के लिए स्पेशल कारीगरों को पटना में बुलाया गया है. डिमांड बढ़ने की वजह से रात भर में वह 50-100 किलो तक तिलकुट तैयार कर रहे हैं. गुड़, चीनी के अलावा वनीला और चॉकलेट फ्लेवर वाले तिलकुट की डिमांड अच्छी खासी है. यहां लोगों की मांग और पसंद को देखते हुए खोये भरा हुआ तिलकुट भी मिल रहा है.

Hindustan (Date: - 10/01/2020)

रिटायर शिक्षक ने बना डाली पूरे गांव की वंशावली

इनसे सीखें

आरा | सुशील कुमार सिंह

लक्ष्य कोई भी हो लेकिन उसे पाने का जुनून हो तो उम्र आड़े नहीं आती है। इस तथ्य को चरितार्थ किया है भोजपुर के सहार प्रखंड के पेरहाप निवासी 74 वर्षीय रिटायर शिक्षक देवेंद्र कुमार उर्फ वरवर मुनि ने। अमूमन अपने परिवार की वंशावली बनवाने में लोगों को काफी मशक्कत करनी पड़ती है। कई जगह भटकना पड़ता है। मगर देवेंद्र ने अपने गांव के हर वर्ग व धर्म के लोगों की वंशावली बना ली। वह भी पूरा ब्योरा हाथ से लिखकर।

गांव गए तो महसूस हुई जरूरत : मुनि बताते हैं- 31 दिसंबर 2008 को रिटायर होने के बाद गांव गया तो महसूस हुआ कि गया में पिंडदान के लिए पूर्वजों का नाम जरूरी है। शादी-विवाह में भी पूर्वजों के नाम से गीत गाये जाने की परंपरा है। उसी समय पूरे गांव की वंशावली तैयार करने का ख्याल आया। 15 अप्रैल 2012 से इस काम में जुट गया व आठ साल में वंशावली तैयार कर ली। केवल ब्योरा जुटाने में दो साल आठ माह 16 दिन लगे थे।

176 घर थे 1971 की वोटर लिस्ट के अनुसार पेरहाप गांव में

877 घर हो गए 2014 की वोटर लिस्ट के अनुसार

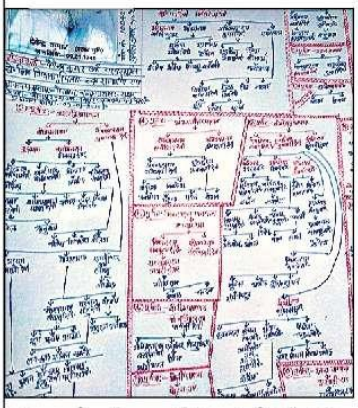

वंशावली : रिटायर शिक्षक की ओर से बनाई गई पेरहाप गांव की वंशावली।

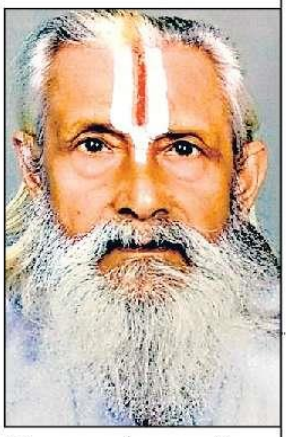

देवेंद्र कुमार उर्फ वरवर मुनि

ऐसे मिला पूरा ब्योरा

इस कार्य में वरवर मुनि को पटना स्थित बिहार राज्य अभिलेखागार के कर्मचारी मो. असलम से सहयोग मिला। उनकी पहल पर राज्य निर्वाचन कार्यालय से मदद मिली। 1951-52 की और 1971-72 की वोटर लिस्ट की फोटोकॉपी मिली। अंचल ऑफिस से खतियान निकाला। 31 दिसंबर 2014 तक पूरा ब्योरा मिल सका। इसी आधार पर गांव की सभी 18 जातियों के लोगों से घर-घर जाकर संपर्क किया। फिर अलग-अलग रजिस्टर बनाकर हर परिवार की मैपनुमा वंशावली बनाई।

खास : हाथी से लेकर साइकिल तक का ब्योरा जुटाया है

रजिस्टर में गांव में हाथी से लेकर पहली साइकिल तक का जिक्र है। शिवनारायण राय के पास पहला हाथी आया तो अमानत मियां के पास पहली साइकिल। हालांकि गांव में कभी तीन हाथी (शिवनारायण राय, कुंवर राय व जदवीर राय के पास) हुआ करते थे पर अब एक भी नहीं है। पहली आटा-तेल मिल खोलने, पहली बैलगाड़ी, पहला घोड़ा, पहली बाइक व पहली बस लाने का श्रेय कुंवर राय को रहा है। बिजली सबसे पहले नथुनी साह के घर आयी।

जन्मदिन पर फोटोकॉपी बांटी

गुरुवार को अपना 74वां जन्मदिन मनाने वाले मुनि ने वंशावली की फोटो कॉपी करा गांव के लोगों में नि:शुल्क बांटी। आरा में रह रहे गांव के 36 परिवारों में इसे बांटा। गांव में भी लोगों को देंगे। वंशावली पर मोबाइल नंबर भी दिया है ताकि किसी को आपत्ति दर्ज कराना हो तो करा सके।

2012

से वंशावली बनाने का काम शुरू किया देवेंद्र कुमार ने

सरकारी सेवा में गांव की 22 महिलाएं

गांव में सबसे पहले मैट्रिक पास करने का श्रेय देवेंद्र कुमार तिवारी को है। पहले स्नातक रामजी राय, पहले स्नातकोत्तर चंद्रमणि राय और पहले आचार्य की डिग्री रामप्रवेश तिवारी ने 1945 में ली। पहली महिला शिक्षिका रामेश्वरी देवी और पहले प्राध्यापक रामप्रवेश राय बने। पेरहाप गांव की 22 महिलाएं भी सरकारी सेवा में हैं। 1949 में पहले शिक्षक कृष्णनंदन राय बने। पहले मुखिया धर्मदेव राय बने।